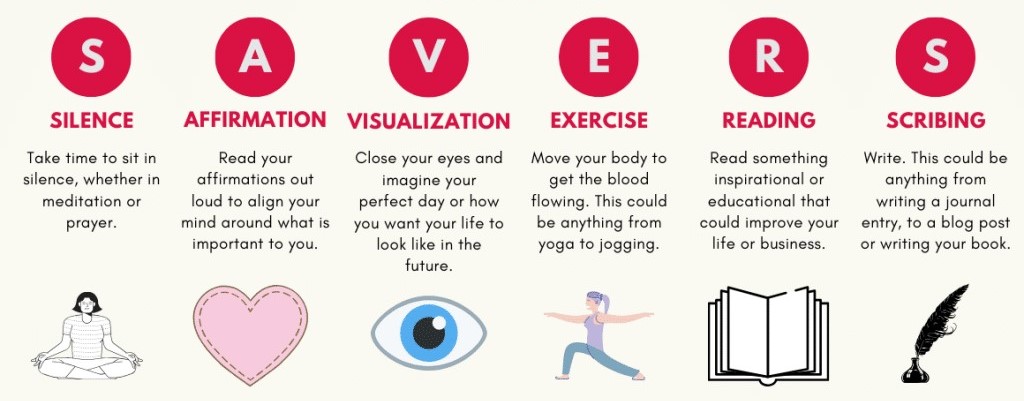
|  |  |  |  |
| --- | --- | --- | --- |
| Depot Name | Code | Cash Limit | MRC LIMIT |
| Csc | 821 | 100 K |  |
| Dinajpur | 828 | 80 K | 800 |
| Faridpur | 825 | 80 K | 800 |
| Feni | 837 | 80 K | 800 |
| Jashore | 804 | 80 K | 800 |
| Khulna | 805 | 80 K | 850 |
| Kushtia | 840 | 70 K | 800 |
| Maijdee | 813 | 70 K | 800 |
| Rangpur | 801 | 90 K | 800 |
| South Dhaka | 809 | 100 K | 950 |
| *Barisal* | *806* | *80 K* |  |
| *Bogra* | *802* | *90 K* |  |
| *Brahmanbaria* | *816* | *90 K* |  |
| *Chakoria* | *814* | *70 K* |  |
| *Chandpur* | *815* | *70 K* |  |
| *Chattogram* | *812* | *100 K* |  |
| *Comilla* | *811* | *80 K* |  |
| *Moulvibazar* | *838* | *70 K* |  |
| *Mymensingh* | *807* | *90 K* |  |
| *Naogaon* | *832* | *70 K* |  |
| *Narayangonj* | *827* | *100 K* |  |
| *Narshingdi* | *831* | *70 K* |  |
| *North Dhaka* | *829* | *100 K* |  |
| *Pabna* | *836* | *80 K* |  |
| *Patuakhali* | *839* | *70 K* |  |
| *Rajshahi* | *803* | *80 K* |  |
| *Savar* | *826* | *80 K* |  |
| *Sylhet* | *810* | *80 K* |  |
| *Tangail* | *835* | *80 K* |  |
|  |  |  |  |



ওঁ ভূর্ভুবঃ স্বঃ  
তৎসবিতুর্বরেণ্যং ।  
ভর্গো দেবস্য ধীমহি  
ধিয়ো য়ো নঃ প্রচোদয়াৎ।।

(ঋগ্বেদ ৩/৬২/১০)

অর্থাৎ যিনি বিশ্বের সৃষ্টি-স্থিতি-লয়ের কারন স্বরূপ, যিনি সৎ-চিৎ-আনন্দময় এবং আমাদের বুদ্ধির প্রেরণা দাতা, সেই সদালীলাময় জগৎস্রষ্টা পরমেশ্বরের বরণীয় জ্যোতির্ময় তেজ/ রুপকে ধ্যান করি। তিনি যেন আমাদের বুদ্ধিবৃত্তিকে সর্বদা কল্যাণময় কার্যে নিয়োজিত করেন।

ওঁ ত্র্যম্বকং যজামহে সুগন্ধিং পুষ্টিবর্ধনম্।   
উর্বারুকমিব বন্ধনান্ মৃত্যোর্মুক্ষীয় মাঽমৃতাৎ।।

(ঋগ্বেদ ৭/৫৯/১২)

অর্থাৎ হে ত্রিনয়ন আমাদের জীবনকে সুগন্ধ ও পুষ্টিতে ভরিয়ে তোল। সকল বন্ধন থেকে মুক্তি দিয়ে আমাদের মৃত্যু হতে অমৃততে নিয়ে যাও।

যজস্ব তন্বং সুজাত।

(ঋগ্বেদ ১০/৭/৬)

হে পরমেশ্বর! আমাকে বিবিধ জ্ঞান দ্বারা সমৃদ্ধ করো।

শ্রেয়ান্ স্বধর্মো বিগুণঃ পরধর্মাৎ স্বনুষ্ঠিতাৎ৷   
স্বধর্মে নিধনং শ্রেয়ঃ পরধর্মো ভয়াবহঃ৷৷

(শ্রীমদ্ভগবদগীতা: ৩/৩৫)

অর্থাৎ *নিজ ধর্মের অনুষ্ঠান দোষযুক্ত হলেও উত্তমরূপে অনুষ্ঠিত আপাত দৃশ্যমান পরধর্ম থেকে সর্বশ্রেষ্ঠ। তাই নিজধর্ম সাধনে যদি মৃত্যুও হয়, তবেও   
সে ধর্ম কল্যাণকর ; কিন্তু পক্ষান্তরে পরধর্ম ভয়াবহ।*

অসতো মা সদ্‌গময়,  
তমসো মা জ্যোতির্গময়,  
মৃত্যোর্মামৃতং গময়।৷

(বৃহদারণ্যক উপনিষদ ১।৩।২৮)

*অর্থাৎ অসৎ হতে সৎস্বরৃপে নিয়ে যাও, অন্ধকার হতে আলোয় নিয়ে যাও, মৃত্যু হতে আমাকে অমৃতে নিয়ে যাও।*

সর্বে ভবন্তু সুখিনঃ   
সর্বে সন্তু নিরাময়াঃ।   
সর্বে ভদ্রাণি পশ্যন্ত   
মা কশ্চিদ্ দুঃখভাগ্ ভবেৎ ৷৷

*অর্থাৎ সকলে সুখী হউক, সকলে নিরাময় হউক, সকলের মঙ্গল হউক, কেহ কখন যেন দুঃখ না পায়।*

‘‘আমাকে সেই শক্তি দাও যা বদল করতে পারবো না, তা যেন মেনে নিতে পারি এবং যা বদল করতে পারি তা করার সাহস দাও।’’